निर्वाणकांड भाषा

दोहा- वितराग बंदो सदा, भाव सहित सिर नाय।

कहूं काण्ड निर्वाण की, भाषा सुगम बनाय।।१।।

चौ. अष्ठापद आदिश्वर स्वामी, वासुपुज्य चम्पापूर नामी।

नेमिनाथ स्वामी गिरनार, बंदो भावभगति उर धार।।२।।

चरम तीर्थंकर चरस शरीर, पावापुर स्वामी महावीर।

शिखरसम्मेद जिनेश्वर बीस, भाव सहित बंदो निशदीस ।।३।।

वरदत्तराय रू इद मुनिंद, सायरदत्त आदि गुणवृंद ।

नगर तारवर मुनि आठकोडी, बंदो भाव सहित कर जोडि ।।४।

श्रीगिरनार शिखर विख्यात, कोडिबहत्तर अरू सो सात।

संबु प्रदुम्न कुमर द्वै भाय, अनिरू ध आदि नमूं बसु पाय।।५।।

रामचंद्र केसु द्वै वीर, लाडनरिंद आदि गुण धीर।

पांच कोडि मुनि मुक्ती मंझार, पावागिरी बंदौ निरधार।।६।।

पांडव तीन द्रविड राजन, आठ किडि मुनि मुक्ति पयान।

श्री शत्रुंजय गिरि केशीश, भाव सहित वन्दो निशदीस।।७।।

जे बलभद्र मुक्ति में गये, आठ कोडि मुनि औरहु भये।

श्री गजपन्थ शिखर सुविशाल, तिनकेचरण नमूं तिहुकाल।।८।

सुवर्णभद्र आदि मुनि चार, पावागिरिवर शइखर मंझार।

चेलना नदी तीर केपास, मुक्ती गये बंदो नित तास।।९।।

फ़लहोडी बडगाम अनूप, पश्चिम दिशा द्रोणगिरि रू प।

गुरू दत्त दि मुनीश्वर जहॉ, मुक्ती गये बंदो नित तहॉ।१०।।

बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय।

श्री अष्टापद मुक्ति मंझार, ते बंदो नित सुरत संभार।।११।।

अचलापूर की दिशा ईशान, तहॉ मेंढगिरि नाम प्रधान।

साढे तीन कोडि मुनिराय, तिनकेचरण नमूं चित लाय।।१२।।

वंशस्थळ बन केढिग होय, पश्चिम दिशा कुन्थुगिरि सोय।

कुलभूषण दिशिभूषण नाम, तिनकेचरण करूं प्रणाम।।१३।।

जसरथ राजा सुत कहे, देश कलिंग पॉच सौ लहे।

कोटशिला मुनि कोटि प्रमान, वंदन करू जोरि जुग पान।।१४।।

समवसरण श्री पार्श्व जिनंद, रेसिंदी गिरि नयनानन्द।

वरदत्तादि पंच ऋषीराज ,ते बंदो नित धरम जहाज।।१५।।

मथुरापूर पवित्र उद्यान, जंबुस्वामी पायो निर्वाण।

चरम केव्रली पंचम काल, तिनकेचरण नमूं तिहुं काल।।१६।।

तीन लोक केतीरथ जहां , नित प्रति वंदन कीजे तहां।

मन वच काय सहित शिर नाय, बंदन करहि भविक गुण गाय।।१७।।

सम्वत सतरहसौ इकताल, अश्वइन सुदि दशमी सुविशाल।

भैया वंदन करहिं त्रिकाल, जय निर्वाणकांड गुणमाल।।१८।।